

सादस्यस्यो यथापद्य नववर्षा वैष्णो य मय न वा पुन न मे गा राधमभन नाश्च
 ममा य मय न नाश्च य मय न नाश्च य मय न नाश्च य मय न नाश्च य मय न नाश्च
 दी नववर्षा वैष्णो यथापद्य नववर्षा वैष्णो यथापद्य नववर्षा वैष्णो यथापद्य नववर्षा वैष्णो
 ममगी र मय न नाश्च य मय न नाश्च य मय न नाश्च य मय न नाश्च य मय न नाश्च
 यथापद्य नववर्षा वैष्णो यथापद्य नववर्षा वैष्णो यथापद्य नववर्षा वैष्णो यथापद्य नववर्षा वैष्णो
 मी यथापद्य नववर्षा वैष्णो यथापद्य नववर्षा वैष्णो यथापद्य नववर्षा वैष्णो यथापद्य नववर्षा वैष्णो
 न वयस्य स मय न नाश्च य मय न नाश्च य मय न नाश्च य मय न नाश्च य मय न नाश्च

कन्यादानपुस्तकं

श्रीगुरुभ्यो नमः श्रीगुरुभ्यो नमः श्रीगुरुभ्यो नमः

ॐ नमो ब्रह्मणे ॥ अथ कन्यादानविधिनिर्णयः ॥ अथादौ जामातामनुदा
 विधिः ॥ ॥ अथ पुनरुदा ॥ ॐ अथादि ॥ यजमानस्य पृथीकन्यादानजामा
 तामनुदा मधुता र्वननिमित्तार्थं ॥ अथाद्याद्यो नमः ॥ ॐ आरुद्रमणि ॥
 पूर्य ॥ ॥ पूषा राऊ नमः ॥ ॐ सिद्धि वस्तु क्रियानमः ॥ यजमा
 नन ॥ पुत्रनमस्कारं न्यासाद्यप्यप्युजा आत्मपूजार्थं ॥ ॥ नमः ॥ जामात
 पूजार्थं ॥ स्वानमः ॥ ॐ जामात विष्णु र्कय ॐ दमासनं ॥ पूर्य ॥

वल् ३

अथ द्वाक न्यायार्थं रुद्रार्थं वन्दनं यस्यायतीत पूषा वाञ्छान धूपदीप
 अथ गन्धादि ॥ ॥ जामात पुनरुदा संकावयुगो पूषा दार्तं गृहीत्वा ॥
 ॐ पू नमः ॐ उदा वदं रुद्रा देव्या मद्रा सुना ॥ मद्रा रुद्रक पू विताप
 श्रीनया ॥ अथ रुद्रकर्मसु ॥ मद्रा के ट रु मद्रा रु ४ पू विर्ग धने ही तर्ली ।
 रुद्रा दाम विष्णु ह्यर्थं सिद्धि मि गन्ध वा विष्णु ॥ गन्ध वा विष्णु मि ह्यर्थं
 न ॥ ॐ ॥ अथ वितापुथि तीये व गन्ध वा निरुल वितापुथि उन्मरु तीयाः

कृष्णाय नमः ॥ ॐ पू नमः ॐ उदा वदं रुद्रा देव्या मद्रा सुना ॥ मद्रा रुद्रक पू विताप
 रुद्रा दाम विष्णु ह्यर्थं सिद्धि मि गन्ध वा विष्णु ॥ गन्ध वा विष्णु मि ह्यर्थं

ॐ शं धूपं २॥ दीपं २॥ ॥ कृष्णाय ॥ ॐ मधुलाय नमः मुख्यं सर्वं नत्वा धिपा
यत्रारुह्य ४ स्व ४ पुकाधय मधुलाय नमो नमः ॥ अग्न्यादि ॥ ॥
स्वगुणवत्त्वा अलिना ॥ ॐ नमो जामाय ॥ ॐ सर्वदेवस्य स्त्री हि सि
द्धिगन्धर्वकिन्नरा ॥ ॐ आद्यालोकयालाद्यु जयाया शेष मा नत्वा ॥
सया जामादियश्च स्य वेक विष्णु मरुद्व्य वा ॥ जामात विष्णु वृषासि
सामाकार्तन मधुल ॥ ॐ रुद्रव ४ स्व ४ लोक ४ दिक्कालादिषु ३ रुद्र

॥ नतदहस्तिमानिह्यं नमो जामात देवता ॥ अग्न्यादि ॥ ॥
स्वगुणवत्त्वा पुष्या अलि ४ य ॥ ॥ ॐ यदि त्वं पतिता नस्या दधदाय
विवर्जित ४ रुद्रं कन्यां प्रदास्यामि देवानि गुर्वसंनिधि ॥ ॥
जामाय ॥ य ॥ ॥ ॐ यदि कन्यां गुह्यं पतां दधदाय विवर्जितां
तदाहं प्रतिगृह्णामि देवानि गुर्वसंनिधि ॥ ॥ स्वगुणवत्त्वा ॥ ॐ अ
मनुष्यकृता यस्मिन् सुशीलसुमनारुव ४ यश्च रुतात्मक ४ क्रीद

कुर्यं कन्या कामया ॥ ॥ जामाय ॥ ॥ ॐ उ सो कूलविष्णु द्वा ॥ स्व नृ
यामयिक न्याका ॥ अथर्वं पुति गृह्णामि देवानि पुनः सन्निधि ॥ ॥
स्वपुनः ॥ ॐ आ मनुनामि जामातः मया पुन्या नूवदिता ॥ कन्यादा
नं पुदा स्यामि अथ मविजयीकृत् ॥ ॥ जामाय ॥ ॐ अथर्वं
पुति गृह्णामि ॥ ॥ स्वपुनः मधुलसु सवोपदानदक्षिण रुता
दि जामायें समर्पणीयं ॥ ॥ ॐ अथादि ॥ ॐ पुं रुं रुनि सुत कथं

सुखाग कन्या न्विना मस्मिन्दिन ममावाधे तदिने विजयीकृत् ॥
स्वपुनः मधुलविसर्जनं ॥ ॐ उ द्रयक मस्व ॥ आचम्य ॥ ॥ जामा
यः स्वपुनारिषकं कुर्यात् ॥ ॐ उ वस्य लुनि ॥ ॐ अन्विना रुसु कनते
जसु वक्रवर्ष सायारि विष्मामि सवले नरुष कनवी शोयानाः
शोयारि विष्मामि नु सन्दि यन वलाया ॥ ॐ उ मरि विष्मामि ॥
वन्दन ॥ ॐ यदयक ॥ ॐ सर्व सुवत्य नू मद्य नरुतति दान मा आ ॥ ॐ

मगधनेवेनममदरिमिअति॥सिन्दूर॥ॐ तं ऊ विष्टदा॥ॐ
शसुममलतमामनशुक्रयतितासिन्दूरदगिवरुकाव
यस्कनरुयस्कनगिरागुर्वतामारुवतिकल्यानमवेनमात्र
शवात्रावदति॥श्रीदीर्घा॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न
तस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न
वस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न
वस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न

कनिकयुगधुनधुमधुधुन॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न
वस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न
वस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न
वस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न
वस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न
वस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न
वस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न
वस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न वस्मन्तावध॥ॐ न

॥ वा ॥ ॐ ॥

नाविनाङ्गाकनूतं दक्ष दवादि वैवाङ्मासधूयाश्रुकीयमाताकृति
 तदनाकासधूयाश्रुकीमाताकनूतं ॥ ॐ ॐ देवदेवि ॥ ॐ ॐ ॥
 जामाया मनु विविधिः ॥ ॥ ततः कन्यादानविधिः ॥ ततः वदिः ॥
 भलाया मास नमादायाह ॥ खलुक्का आसनने ॥ ॥ सधुवदके
 याग ॥ ॐ साधुर्देवासा मन्त्रयिष्टा भारवर्क ॥ ॥ जामाया ॥ ॐ ॐ
 देव ॥ ॥ सधुवदविष्टनदयंगुदीलापु ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ विष्टना ३ विष्टन
 ना २

४ प्रणिष्ट अर्गा ॥ ॥ जामाया ॥ ॐ विष्टनं प्रणिष्ट द्वापि ॥ ॐ वनिष्ठा
 सिन्धुसमानानां मयतामिव सूर्यः ॥ ॐ मन्त्रमर्हिष्ठा मिथामाक
 हिदासति ॥ एकमासनं पुनर्वकपादासनं ॥ ॥ सधुवदश्रुद
 नपादाय ॥ ॐ पाद्यं ३ पाद्यं प्रणिष्ट अर्गा ॥ ३ ॥ ॥ जामाया ॥ ॐ
 पाद्यं प्रणिष्ट द्वापि ॥ ततः पादय द्वालेय निमकु ॥ ॐ विनाङ्गादाह
 सि विनाङ्गादाह मसीया मयि पाद्यायेति नाङ्गादाह ॥ ३ ॥

स्वधुत्रलकापीलनठुनइय॥ ॥ जामाया ॥ मूषीमात्रमा ॥ ॥ स्वधुत्र
धर्मस्वसदुदुल्लेनस्यमूर्यवियमन्त॥ ॐ मूर्या ३ मूर्य ४ प्रणिगृप्त
नी॥ ॥ जामाया ॥ ॐ मूर्यप्रणिगृप्तानि॥ ॐ श्रावस्वयुष्मादि ४
सर्वान्कामान्नवाप्तुवन्ति॥ नमस्तुधरुमीनिधाय॥ ॥ ॐ समुद्रं
व४पुद्गिनाविस्वायानिमधिगच्छते॥ श्रुतिस्माकंवीनामायवासं
विमत्यय॥ ३॥ ॥ स्वधुत्रल ॥ ॐ श्रावमनीयमात्रमनीयमा

वमनीयं श्रावमनीयं प्रणिगृप्तानि॥ ३॥ ॥ जामाया ॥ ॐ श्रावमनी
यंप्रणिगृप्तानि॥ ॐ श्रावागम्यस्वसास्वसुदुवर्चसा॥ नमाकूत्रप्रि
यंप्रजानामधियतिपधूनामविहृत्तनूनामा॥ ३॥ उपस्यर्गनी॥ ॥
स्वधुत्रलमधूपर्कन्द॥ ॐ मधूपर्क ३ मधूपर्क ४ प्रणिगृप्तानि॥ ॥
जामाया ॥ ॐ मधूपर्कप्रणिगृप्तानि॥ जामाया ॥ मधूपर्कतिनीकन॥
ॐ मिथस्यत्वावदुषासमीक॥ नमधूपर्कप्रणिगृप्तानि॥ वासदुर्क

॥ ॥ पुनः यश्च मुलिरिष्टा तुं डर्मा मां डा डा मु ॥ उ नू द य ॥ ॥ पुन
 न व यश्च मुलिरिष्टा तुं मु नि षा ति म नी ति न नू र्क धा म स रु सु म मु ॥ ग
 न स वे ग म या धि य (ग न ॥ ॥ ० ॥ त न ४ ख गु न धा (गो वि ति या द ॥ ६
 तुं (गो (गो (गो ४ (गो ४ प्रे ति गृ द्वा गां ॥ ॥ जा मा या ॥ तुं गं प्र ति गृ द्वा
 मि ॥ तुं मा ना नू डा धां दू हि गा व सू ता र्धं स्व सा दि त्या ना म म न स्या ता रि श
 य पु त र्वा रि कि तु स ड ता य मा ग म ना ग म म दि ति च सि षा म म वा म य

उ २
 य या यान नू द ना मी ति य द्या ल रु ना थ य यू ति स रु द्वा म म वा म य वा ॥ ॥
 श्र म रु का (ग म या मू क ना म ग म र्मा धा या मा द न ४ ॥ मू ल उ रु धां न्य रु
 ति ड्वा ना न वं वा मा र्ध सा र्ध सा द धि य रु म धि वि वा र्धं वू न म न व ड्वा
 द य य म रु क्ता च न स्या मा म न य ड्वा ना यो व वे नं डा ड्वा य य ना
 रु ना यो र्धं ति थ र्ध ॥ ॥ स्व गु न धा र्ध र्ध न जा मा या क न्या या व
 रु वि य ॥ ॥ जा मा या न द्वा मुं ड य न ॥ तुं ड ना र्धं दू य नि ध

त्ववासाहवाकृष्णनामरिसक्तिपावा। गगनश्रुतीवामिगनदः सु
वर्शोवयिः श्रुपूया। ननसंद्यास्वायुष्मतीदंयनिधस्ववासः ॥
मरुतनीयमनु॥ तु या श्रुते नंते यं न्याया श्रुते नंते नः। या धुदं वी
रुते नंते हिता नंते थतास्वादेवी ऊनसंययस्वा युष्मतीदंयनिध
त्ववासः ॥ ॥ सुगुप्तमपठपावति। त्रियातं वसु। दिवियः ॥ भ
वातिवियमनु॥ तु नूसाद्राष्टादवर्षा गच्छतः। यदा तावसाविधः

गि। डा। तावियमनु॥ तु यस्मायवीतं यनसंयविर्गं यडायतं यः सः
हयपूत्रकातुश्रायुष्मामुंयतिमश्नुतुयं यस्मायवीतं वलेमनु
तुडः ॥ लंठवियमनु॥ तु यनिधस्वयः। धासीदीर्घायुस्वायनद
स्तिनामक्षगगनश्रुतीवामिगनदः पूनूत्रीनायस्वायमविर्मययि
शः ॥ ॥ अनिधिवियमनु॥ तु यनन्दायतु रुस्यतिर्वीसः। ययुन्दः
दमृता। तनत्वायनिदधाम्यायुषदीर्घायुस्वायवनायववसः ॥

नमो विष्णवे नमः ॥ ॐ यमसामाशायापवित्री यमसामायाय वृद्धस्य नि। य
 ॥ ॐ रुद्राष्टमाविद्यसासायति पद्यगां ॥ सुवर्णं शुक्तिविद्यमनु॥ ॐ
 हि न व्यग्नं हति ॥ पयं द्रुमसमविद्यमनु॥ ॐ गं वडया वता वतं म
 दीयं सुस्य नपुद्रा। उही कर्णुहि न व्यया ॥ वन्दनविद्यमनु॥ ॐ य
 दयं कति ॥ वता विविद्यमनु॥ ॐ युवा सुवासाः पवित्री नमो गमसः
 उत्सयां रुवति जायमानः ॥ ॐ धीनासः ॥ कवय उन्नयति सा। ॐ न

सादवय नः॥ मालस्नानवियमनुशा॥ ॐ यद्यसौ स्नानसाप्तिदुष्टकायूर्न
 मृथुशानं नमस्तु चितासमनस आवन्मामिय॥ ६॥ मयि॥ द्वाकस्नानवि
 यमनुशा॥ ॐ या अन्नरुर्जमदग्निश्च द्वाये कामायन्दि या या। मा भदं पुमि
 मृद्रामिय॥ साय रुगनव॥ नानादि सर्वालं काननियमनुशा॥ ॐ अ
 लं कं नममिरेया॥ ६॥ लं कं नममिरेया॥ ६॥ लं कं नममिरेया॥ ६॥ लं कं नममिरेया॥ ६॥
 लं कं नममिरेया॥ ६॥ लं कं नममिरेया॥ ६॥ लं कं नममिरेया॥ ६॥ लं कं नममिरेया॥ ६॥

सातुं कयनी २

ॐ हृदयं त्वामनं सुखादिवं त्वामुखाय त्वामुखात्तु धनं दिविदं वं वं
हीतिना त्वं त्वामिवास्ति ॐ

स्वकी यवकी य
 त्वयं विविधा यमदिष्ट कलिका जामा उभालं कानमहं साल कानव
 डिङ्गिकन्या जनिदा गव्यं ॥ * ॥ जामाणि ॥ उदयस्त ॥ ॐ ॥
 स्वपुत्रा कुशगिल्ल उलंकव्या हसं गृहीत्वा य (०) ॥ उग्र प्रवासाह
 कल्पति ॥ उग्र आदि ॥ अमृक (म) प्राय अमृक युवलोया मृक युव
 लमया ह मृकना मधुम (६) वा म्रधाय विमिष्टाय जामाये ॥ अमृ (म)
 यी अमृक युवलो अमृतो मम्री कन्या मालं काला प्रजापति निद

922 राजा जयसिंह-श्रीदामोदिविदे

3476

ASHA ARCHIVES

ल म दशरथ

[illegible]

धारयशाहे अथपूर्वाधनूदक्षिकाकामंकासधूधधूह नि शाययनूत्त
 यत्र। ॐ लो याव्यिह्यांयूषं युजा ह्यडा। वधी ह्य४००० द व त्याः
 वेकसिन नास्याद वगा ह्य४ सदात्का। मान्युद्ध॥ ॥ ३०० वासिध
 वायं यजमाना अस्मिन्ना यानेन यजया यधुरिर्हु याग। ॥ ३०० न शावा
 यथिवी पूर्य अमित्यु ह्य कृदिनसि विध्युत न ह्य क्का याम् ॥
 ३०० अथेव महिष्यमाव यतिधु वासिधु नारायं यजमाना अस्मिन्ना

१ ॐ दे काम काम मय त काम ४५ न ह्यम ॥

यत न षड्रया रूयादिगियष्टुहिनिति वेयं कामं कामय तं सा सो का
म ४५ म ४५ ॥ लु द क्रि क्ष वि य ॥ अ मू क (म) य य अ मू क य
व ला य अ मू क ना म ४५ म (६) ए न ले न्या दा न रु न य ति ष्ठा र्थ मि दं
हि न ध्य म नि दे व रं जा मा गुं द क्रि क्ष नु र्थं संप द द ॥ ॥ अ ग
न ध्या दि ॥ ॥ जा मा य ॥ स्व र्णी ति पु ति व र्त्त ॥ ॥ ॐ नि द क्रि क्ष
दा न वि धि ४॥ ॥ जा मा य ॥ द क्रि क्ष स्का व धू उ य यि त्वा ॥ ॥

स व र्त्त ३

ॐ आ गु ४ नि ष म ना रू य ॥ ॐ आ गु ४ नि ष म ना रू य रु न री म न्त्वे न्द्रा रि
वृ पा द्वा द्द र्शं रु व नि द्वा द्द र्श मा सा ४ स त्व त्स्व न स त्व त्स्व न नि र्या या न नि
य ति ल्य स्या मा य ता वा मे वे व द्द क्रि क्ष तां सु वा न न क ष सि ॥ ॥
जा मा य ॥ स्व गु ना रि ष कं क र्था गु ॥ ॐ द व स्या त्व मि ॥ ॐ या ला स रू
व मि त न वा क्त (६) रि षि ऋ मि (६) वे य ला सा व क्त (६) वे न मु त द
रि षि ऋ मि ॥ ॐ द व क ल्यां इ हा मि प्रा षा वे क ल्यां अ मू क मू य ४५

मा नृमृतं नैवेतु मृतदरिद्रि श्रुति। सर्वेषां वा प्रवृत्तं दातुं न सा
यत्ना मम सर्वेषां नैवेतु मृतं दत्तं दातुं न सा मरिद्रि श्रुति॥ ॥
चन्दन॥ ॐ यदयं क॥ ॐ किं कुन्दका देवता। मन्तातिनिका नितित्व
नादं वा कुन्दया देवता नातिनिका नितिसखात्मविदेवेन सा यादृ
वेतादवा प्रमा नै ॐ संस्कारा नादाया न्यानाया या श्री वी नकी॥ ॥
सिद्धे न॥ ॐ त्वं विदुदा॥ ॐ त्वं विदुदा सुखं ॐ ति य उमा मा वे

दास्वानुयादीति मन्त्रादेन न॥ ॐ धीमहि नमः ॐ ति नृमृतं ॐ सा ॐ सु
तिमिदं तद्वत्ता कु मृतं ततति य उमा वेता क ॐ न द्यु डा अत्मा
नंदा॥ ॥ श्री वी द॥ ॐ कं न्या ॐ ववदु पुमन वा उ श्री अ अना श्री
रि वा कशी मि। यय सामः सुयतं यय यस्मात् तस्या धना श्री रि तत्य
वर्क॥ ॐ वषा कं न्या ॐ ववदु नु ता ववे तु ॐ न्मा श्री रि श्री जाना श्री
रि वा कशी मि यय सामः सुयतं यय यस्मात् तस्या धना श्री रि वत्य

वक्ता श्रुतिवर्षसर्थतिष्ठमुमिति तिष्ठमुमिति नृवाजान् श्रुमान् रुः
द्राद्रुवित्तानिधर्तं ॐ सन्तयत दवगानां मधुमती मधुमेति वक्ता ॥
सिद्धिमुद्रकाया ॥ ॐ धीधृते ॥ ॐ तावावतायक दवगानां नृवाजान् श्रुमान् रुः
धीयतु नृवाजान् श्रुमान् रुः स आरुका मसमा द्वातु नृवाजान् श्रुमान् रुः
नृवाजान् श्रुमान् रुः स आरुका मसमा द्वातु नृवाजान् श्रुमान् रुः ॥ ॐ वक्ता ॥
ॐ वक्ता ॥ ॐ दमय श्रुतिवर्षसर्थतिष्ठमुमिति तिष्ठमुमिति नृवाजान् श्रुमान् रुः

जावन्नादिवित्तनस्यादधविगं मस्यादधकर्म कूर्वी नृवाजान् श्रुमान् रुः
यामके कनपाश्चात्तिव कृष्ण नृवाजान् श्रुमान् रुः ॥ ॐ ॐ
दृष्टुं दृष्टि ॥ ॐ स रुद्रातिगदृष्टुं दृष्टि कृतननं श्रुतीति प्रुडतनं दृष्टि
दृष्टि यथा यदि सामादृष्टितीनमिति या दृष्टि दृष्टि वीना ४ या दृष्टि वीना ४
रुद्रा सर्वगमिह्यमिति विसर्वगम श्रुतीति वीना ४ या दृष्टि वीना ४
सतीत्यात्मा संभव सतीति प्रुडतनं दृष्टि वीना ४ या दृष्टि वीना ४

ददंगन्धर्वोयगन्धर्वोदददन्तुयनयिञ्जपूपांश्चादादनिर्मस्रमथ
 ॐ मां। सातष्टयाष्टिवत्तमाभिवयसान्तुवृद्धगतीविहनायस्यानू
 गन्तुयुद्धनामलैर्ययस्यामकासावह्वानिविह्वेष्ट॥ ॥ सावधुति
 वीक्षमाभिमितियितुष्टुष्टु॥ ॥ दक्षिणस्मावधुजासायाह्वैष्टुष्टु
 वादक्षिणवर्तनतासाह्वैष्टुष्टुमरुगनिधाय॥ ॥ ॥ तमावाह्वैष्टुष्टु
 पूजादक्षिणकोणोर्वादि कानयन॥ ॥ ॥ धनम्बयम्बलचनदव

[illegible]

१३ गम्यन्ति यगन्तु (१) ल्या रा न द्वा जा मि न स वा रु ह्य नि य शु पु य ल मा श्र
 दि न श य व वा ड ण ने ध न ह स्य धी लि ख वा पु नी त म वा ड व स्य धी लि ख
 व ना ना य ण रु द्वा न क र न ध क म ल स वि त स्य धी ल लि त य द न म ति म
 पु य स्य धी पु ण ली स फ रु ण ल क र म द्वा ना म धि वा ड धी म न्ना लि क
 मा न य न ध म्बु डा ना ध न स्य धी म न्ना धी ध नै ड ध्व न रु द्वा न क पा द
 य क ड पु डा न न स्य धी ३ मृ ति म स्र क ण व पा द य क नू र ण पा सि त स्य

धी ३ रु (२) ध्व न नि स्या र्च न न न स्य धी ३ स्र ष्ट द व गा य नि दि न पु श्र मा
 न स्य धी ३ ण क न ना ना य ण व न ध क म ल धू लि धू स लि ता रु मा न स्य धी
 ३ मा न ध्व नी ष्ट द व गा व ल ल व पु सा दि त स्य वि वि ध वि नू द व ली वि
 डा ड मा न स म रु गु ण य कि या स म ल क र्त्त य न्न व र्त्त स पु नि दि न स र्दि
 मा पा १ य ड न डा य ना ध्व य ध्वा य ना दि ष्ट क र्त्त क र्त्त द्वि ड व ना रु म ॥
 मृ मृ क र्त्त १ पु यो दा या मृ मृ क र्त्त १ मृ मृ क र्त्त १ मृ मृ क र्त्त १ मृ मृ क र्त्त १ मृ मृ
 क र्त्त १ क न्या र्थि न ॥ ॥ मृ ति म ति ड्ड या (म यो यो न व ३) ॥ ॥

मृ मृ

कुंभार्ग्यगमयुगार्ग्यलोलरानद्राङ्गानि न सवार्हस्य स्थितिपञ्चप्रवत्तमाध्व
न्यिनमस्वयाङ्गानेध्वनयस्थीललितपटनस्वयं युष्मत्ती सफरुध
लंकृतमहा नागभिनाङ्गामनासिकमानयनयस्थीङ्गमविनस्यधाम
कुंभी श्रुतिमन्त्रकैवलादसनाङ्गानाधितस्थीङ्गनिखननायाध
वनयनविन्याङ्गनयनस्थीङ्गकवतायाधपादपङ्कजपञ्चपिङ्ग
लितमूर्धङ्गस्थीङ्गगवतीद्वीनित्याङ्गनयनस्थीङ्गनलेध्वनयनय
कमलसपथ्याङ्गस्थीङ्गमानयनीष्टदवतापूजाङ्गस्थीङ्ग

निहाय संसविनस्यनित्याध्वयनयङ्गवदमथ्यादासहादधधिविधवि
वृदावलीविनाङ्गमानसमस्तपुक्रियानलितनरास्वनयङ्गकर्मनिनय
समस्तगुष्मलङ्गनयालदशीययनमध्यायियात्वेयश्रुमृकङ्गर्मद्वि
प्रथीयाय । श्रुमृकङ्गर्मद्विष्टीयाय । श्रुमृकङ्गर्मद्विष्टपूयाय । श्रु
मृकङ्गर्मद्विष्टकन्याथिना ॥ ॥ दुधिरवाङ्गयाङ्गानि ॥ २ ॥
कुंभार्ग्यगमयुगार्ग्यलोलरानद्राङ्गानि न सवार्हस्य स्थितिपञ्चप्रवत्तमाध्व
न्यिनमस्वयाङ्गानेध्वनयस्थीललितपटनस्वयं युष्मत्ती सफरुध

वायव्यरुद्रावकचनवहकमलसवितास्यशीललितपटनमलिसमुप
स्वर्गप्रदालीसफरुद्धालकृत्तमदानामधिनोडधामलिकुमा
नवनक्षत्रजावाधितस्यशीमगुहीशीधनैर्दंष्ट्रवरुद्रावकया
दयंककयूजावतस्यशी३ मूलिमल्लकणवपादयंकनूहायाति
तस्यशी३ कंकरनावायव्यवनवहकमलधूलिसविताकमान
स्यशी३ स्वसुदवतानित्याद्यनतत्यवस्यशी३

लक्ष्मीसुदवतावललपुष्पसादितस्यशी३ यंत्राग्निकायनित्यरु
वनयविशीरुतपत्रमवक्रवर्चसः४ पुतिदिनयकूर्चदाक्षयन
काचार्यपत्रोपकावह४ नवदिन्दुसूत्यनयव४ पत्रिपूनिता४
दिगन्तवदिगन्तारुलितगुणगणनिवक्तृनिवयप्रगुपयया
दिकाटिकासाचार्यविविदविश्वविनादनलितप्रकाशनेकदिन
कनस्यमयादामहादधनित्याविश्वारुममूकगमोव४ पुषी

पाय । श्रमकहर्महृषोपाय । श्रमकहर्महृषूपाय । श्रमक
हृषहृकन्याधिनि ॥ ३ ॥ वखनिपयागमयात्रावहृष ॥ ॥

उगमग्यस्यागमगमग्यलोलरानवद्यामिनसवार्हस्यत्यनियपक्रयवल
माध्वान्दिनगमखवाउगनेध्वनहसाधीमहीधीमादिगननेमृहसु
वृक्षपुननिवासिगस्य धी ३ धीनिखवध्वनितिन्ननावायहृषदव
तायादकमलमहृषासिगस्य धी ३ यंयान्तिदवमासदानाधनस्य

धीमहीधीधनंउध्वनयादयकउतत्यनस्य धी ३ श्रुतिमल्लकगव
वनधकमलयुजितस्य धी ३ मानरैनवाध्वनयनायहृष धी ३ मा
नध्वनीहृदवतायादयंकनूदायासिगस्य धी ३ रुगवगीदवी
याददयसर्वदाध्वनननस्य धी ३ ध्वनीहृदवतानिहृ
त्यार्धनतत्यनस्य धी ३ विनैध्वनरुदानकयादामूऊयूजाहृ
तस्य धी ३ श्रानध्वनीदवीवनयुष्मादितस्य धी ३ मदिक्माना

यिसंवाजसंवनात्कलितस्य षट्कर्मोक्तिरयसकलयरूयज
नयजुर्वेदस्वाध्यायनगविविधविनूदावलीविनाउमानसमसुगु
भालहंतस्यक्रात्रार्यमर्यादासहादधविषयकूलतिलकोरुमस
स्य अमूकनामसमसं ४ पुयीयाय । अमूकसंमसं ४ पुयीयाय ।
अमूकसंमसं ४ पुयीयाय ॥ अमूकसंमसं ४ कन्यायिनि ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अमूकद्वीवनायिनीति स्त्रीयक्रयय
जामातुर्नोमात्रानां ४ नमः कन्यायारुवति ॥ ४ ॥ पुण्याभ्यां नाना ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अमूकद्वीवनायिनीति स्त्रीयक्रयय
जामातुर्नोमात्रानां ४ नमः कन्यायारुवति ॥ ४ ॥ पुण्याभ्यां नाना ॥
लमाध्वान्दितस्यस्वीयवाउडातयित ४ श्रीशिखनापूनीनगत्रशीणि
खननात्रायहाव्यनरुदात्रकत्रनस्रविन्दयूजातिगयवायदावः
समइवस्य श्रीललितपटनस्यधुपधाली सफरुधालकृतमहाना
मधिनानाश्रीमन्मधिकमानयदप्यकजसंवितस्य श्रीमन्मधिक
मिहा नृपुवसिगपुयमानदादधुस्य श्री ३ धनं ४ धनपादप

॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥

कुंगमर्गामपुस्यम र्वाणिलरुनद्धांगिनसुवार्हस्यधितियः प्रवलमा
अदितनक्षत्रवाङ्मनयत्रवधस्यशीललितपदतनमसिमिषु
यस्यपुष्पमालीसफरुधमर्लकुनमहातामसिवाङ्गीमसिद्विमा
नत्रवधस्युजावाधनस्यश्रीमकीशीगिरवनात्रायधनवधक
मलमविनस्य श्री ३ धर्मेज स्वत्ररुहात्रकयादाकुर्मसविन
स्य श्री ३ जूलिमल्लुकेशवयादयद्रूपनागधूत्रिधूषत्रिताम

माङ्गस्य श्री ३ वेङ्कवीरुं दवीमगधयतिदिनयादकमलयश्चमा
नस्य श्रीमानस्वत्रीरुदवतारुत्रवगधगुर्वीवाधनस्य श्री ३
यश्चिमायकुङ्किर्कस्वत्रीसिद्धिनाथनिर्यात्रनतस्य श्री ३ य
थात्रामस्वत्रयनिदिनयूक्तिनस्य श्री ३ तंजस्वामीनात्रायधवल
लव्वयसादिनस्य यद्रुमातिशयसकतमरूपेवाग्निदातुयश्च
दयदकुर्मसहिताया ० विन्दति श्रीसाम्भकावायमयादामहो

दाधत्रिखादि विविधविनूदावलीविनाडमान समस्तयक्रियास
 मलीकननयालदंशीयशीवंलानिर्मैवं।शमद्वविवक्कलतिल
 कयूवृषाकसावगानद्विजवननूम्कयनिशमैदः४युयोर्यय
 ॥ ॥ जूम्कयनिशमैदः४योजाय ॥ ॥ जूम्कयनिशमैदः४यूया
 य ॥ ॥ जूम्कयनिशमैदः४कन्याथिन ॥ ॥ वलानिर्मैया।गडे
 द्वात्रदी ॥ ॥ ६ ॥ ॥ गुरुमसुसर्वदाहवतु ॥ ॥ ७ ॥

३१ ३२
 रत्नमावन्त ॥ ॥ जूथमत आदित्यदुहितानयसाहायताडहावनावर्कनादिन
 मंजुनाः नयसुक्कमात्रिवनिषः सदेमाहिनयसाः कडसानयनीतिहिदी
 गाः लक्ष्मसुनलनः देकुरुनृपः गुरुममवाक्यैः वाक्कलीनीः वलसो
 रवाः प्रकाशदानयदानिकाः जूविधवाजूषयूगडी ववेमानुहवादीः
 प्रियवादीः पुषलकालीः सस्यवादीः वाक्कलीसर्वैः माहुल्यडतिः यिष्टु
 लडतिः रत्नैर्वैवाक्किदीवः पूजिनः सुयूषिर्नय ॥ यथेन्द्रस्यदीनीय
 थदलनथसुकीलत्याः यथनामसमीनाः यथनायलस्यमदीदनीयथ
 वाननयनानाः यथवायानजूनः यथननस्यडमयनीः यथसोदाम